श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सा विद्या या विमुक्तये

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

अक्तुबर - २०१५

ऐनरोलमेन्ट नंबर

५

शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	सिद्ध पुरुष
(२)	उपशमित
(३)	अक्षय कोष
(४)	शुष्क ज्ञानी
(५)	आहारक
(६)	कुमारपाल राजा
(७)	शांतिनाथ भ०
(८)	मानसरोवर
(९)	संधारक
(१०)	कुलीनता
(११)	त्याग-वैराग्य
(१२)	मिथ्या-दृष्टि
(१३)	नाराच
(१४)	उल्लसित
(१५)	गिरनार पर्वत
(१६)	स्थावर
(१७)	कुवर
(१८)	समन्वय
(१९)	वायुकाय
(२०)	त्रिभुवनपाल चैत्य

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	सर्वार्थ-सिद्धवालोंको
(२)	दृष्टि
(३)	अज्ञान के
(४)	गौड देश
(५)	रक्षण की
(६)	उपा० विजयचन्द्रजी
(७)	उपशांत मोह
(८)	विशुद्ध सत्क्रिया
(९)	सिद्धराज जयसिंह
(१०)	केवलज्ञान की
(११)	मिथ्यात्व
(१२)	अवधि दर्शन
(१३)	सुरपाटण
(१४)	क्रिया
(१५)	मंत्री कपर्दि

(५)	संघयण
(६)	सूवर (भुंड
(७)	प्रसन्न हो
(८)	तीन
(९)	मार्ग का जानकार
(१०)	नीचे पडना
(११)	इस अपूर्वकरण
(१२)	स्वयं के स्थान में
(१३)	राजहंस
(१४)	विषाद
(१५)	मिथ्या
(१६)	मगन रहना
(१७)	मोहनीय का उदय
(१८)	भय / मुश्किल
(१९)	और
(२०)	अज्ञानी

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	अज्ञान
(२)	सत्र
(३)	स्त्री
(४)	पांच

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	३	(६)	९
(२)	६	(७)	४
(३)	८	(८)	२
(४)	१	(९)	५
(५)	१०	(१०)	७

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१५
(२)	१४
(३)	८ वां
(४)	९
(५)	300
(६)	१
(७)	१९८२
(८)	१३
(९)	१ करोड
(१०)	१

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	११
(२)	✓	(२)	२०
(३)	×	(३)	५
(४)	×	(४)	१३
(५)	✓	(५)	९
(६)	✓	(६)	१८
(७)	×	(७)	४
(८)	✓	(८)	१९
(९)	×	(९)	१०
(१०)	✓	(१०)	२०

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. अचलगच्छ :- राजा को संतान न होने से राजाने एकबार पुत्र कामेष्ठी यज्ञ कराया। उस यज्ञ मे यज्ञमंडप मे प्रवेश कर गयी गाय को वहाँ लकडे के ढेर मे छुपे साप ने दंश किया, और गाय की मृत्यू हुई। दुसरे दिन पंडितने यह दृश्य देखकर दुविधा मे पडे, यह विघ्न दुर हो जाय तो ही यज्ञविधी आगे चल सके, तब वहाँ विराजित आर्यरक्षित सुरी चमत्कारी पुरुष थे राजाने सुरीजी को प्रार्थना की सुरीजी ने राजा को यज्ञका विघ्न दुर करने का वचन दिया। उन्होने परकाय प्रवेशनी विद्या के प्रयोग से मृत गाय को यज्ञमंडप मे से जीवीत बाहर निकाला, सुरी अपने वचन में अचल रहे होने के कारण अचलगच्छ संबोधन मिला।

२. ज्ञान और अज्ञान :- पदार्थ को विशेष धर्म को जानने की जीव शक्ति ज्ञान है और मिथ्यादृ के ज्ञान को अज्ञान कहते है। १३ देवता, तिर्यंच नारकी को तीन ज्ञान - मति, श्रुति, अवधिज्ञान और तीन अज्ञान - मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंगज्ञान होते है। ५ स्थावरकाय को ज्ञान नही होता। सि दो अज्ञान (१) मति अज्ञान और श्रुत अज्ञान होते है। ३ विकलेंद्रीय को दो ज्ञान मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और दो अज्ञान - मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान होते है। गर्भज मनुष्य को पांचज्ञान - मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यव, केवलज्ञान होते है। और ३ अज्ञान - मति, श्रुत, अवधिअज्ञान होते है।

३. मोक्ष का मार्ग - मोक्ष का मार्ग ज्ञान और क्रिया द्वारा प्राप्त होता है। क्रिया के बिना सिर्फ ज्ञान से ही मोक्ष नही मिल सकता। जैसे क्रिया बिना ज्ञान बिना काम का है वैसे ही ज्ञान बिना की क्रिया अधुरी है, कारण की ज्ञान नही है, तब तक जीव अंधेरे मे भटक रहा है। जैसे सुअर विष्टा मे मग्न होता है, वैसे ही अज्ञानी अज्ञान में मग्न है; जैसे राजहंस मानसरोवर में मग्न होता है, वैसे ही ज्ञानी ज्ञान मे मग्न रहता है। जहर को जहर जानने के बाद उसका त्याग करने में ही ज्ञान की सफलता है। जहर को जहर जानकर भी उसकी त्याग की क्रिया न हो तो ज्ञान का कोई अर्थ नही है।

४. उपशांत मोहनीय च्यवन :- पानी मे मिट्टी आदि की मलीनता हो और उस पानी को स्थिर तो मिट्टी बैठ जायेगी, मिट्टी पानी में है परंतु पानी स्थिर होने से उपर का पानी निर्मल दिख देगा। निमीत्त मिल गया तो फिर से पानी मलीन हो जायेगी, ऐसी हालत उपशान्त मोहवाले की मोह है, मोह गया नही है, निमित्त मिलनेपर मोह उछलता है। उपशान्त सम्यक्त्ववाला साधु चारित्र मोहनीय के उदय को प्राप्त कर उपशान्त मोह से नीचे पडता है। मोह जनित प्रमाद कलुषितता को प्राप्त करता है।

५. हेमचंद्राचार्यजी :- श्री हेमचंद्राचार्यजीने १ वर्ष में सिद्ध हेम व्याकरण की रचना की। स लाख श्लोक प्रमाण वाले ग्रंथ को हाथी की अंबाडी पर रखकर शोभायात्रा निकाली। सुंदर साहि सर्जन कर सर्वत्र ज्ञानभंडार बनाये, साडेतीन करोड श्लोक का सर्जन किया। माता साध्वीजी की स्मृति मे १ करोड नवकार मंत्र के जाप का संकल्प किया, नवकार मंत्र की अद्भुत आराधना विश्व को उसके महत्व का परिचय कराया। योगविद्या का परिचय कराने उन्होने व्याख्या की पाट से अद्धर आकाश मे स्थिर रहकर प्रवचन दिया था। नवकार मंत्र मे है मंगल उसी तरह पंचमी की संवत्सरी को अपनी स्वीकृती प्रदान की थी